ISSN 2231-1629
Knowledge Resonance

IMPACT FACTOR 8.072
January - June 2021- Vol. 10 No. 1

झाडीपट्टी रंगभूमीः सांस्कृतिक उद्योग से वाणिज्यिक उद्योग

डॉ. रविन्द्र प्रभाकर हरिदास
M.F.A. (Drama), Ph.D.

★★★

सांस्कृतिक उद्योग से वाणिज्यिक उद्योग के पथ पर अग्रेसरः– झाडीपट्टी रंगभूमी का विशेष महत्व यह है कि, जिसे सांस्कृतिक उद्योग के रूप में जाना जाता था, अब व्यवसायिकता (1990 के बाद) में बदल गया है। और झाडीपट्टी नाटकों 'अब' पट्टि कि (केवल आर्थिक मानदंडों के अनुसार) हो गया है। अब यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि महाराष्ट्र में रंगमण्डल क्षेत्र का अधिकांश व्यवसाय झाडीपट्टी में किया जाता है। क्षेत्र में लगभग 10 से15 हजार पेशेवर कलाकार इस व्यवसाय से जुड़े हैं। इस पांच महीने की अवधि के दौरान वित्तीय कारोबार लगभग 50–70 करोड़ रुपये का है। कई लोगों को रोजगार मिल रहा है और हजारों लोग रोजी–रोटी कमा रहे हैं। इससे हम अंदाजा लगा सकते हैं कि रंगमण्डल कितना आर्थिक रूप से समष्द्ध है। झाडीपट्टी रंगभूमी में नाटक के कुल टिकट प्रति प्रयोग लगभग 50000 रुपये से लेकर 80–90000 रुपये में बिकते हैं। नाटक के अंत में, आयोजकों को सभी बकाया राशि का भुगतान करना होता है। आगंतुक रात भर चलने वाले नाटकों का आनंद लेने के बाद गाँव लौटते हैं। शौकिया से पेशेवर तक की यात्रा के दौरान झाडीपट्टी रंगभूमी । मन के कोने में कहीं न कहीं उदासी है, इसका मुख्य कारण इस व्यावसायिक नाटक आंदोलन में रिकॉर्ड बदलाव है जो 125 से 150 वर्षों से चल रहा है। संगीत का स्थान अब गद्य नाटकों ने ले लिया है। भारी वित्तीय उथल–पुथल के कारण शहरी कलाकारों का स्वार्थ पैदा होता है और वे नाटक के मौसम के दौरान वे वहाँ बस्तान बसाते हैं। इसके अलावा, ग्रामीण रंगमंच मंडली ने बड़े शहरों में जाने–माने वाणिज्यिक कलाकारों को आमंत्रित करके स्थानीय कलाकारों की उपेक्षा की है।

हालांकि यह कुछ हद तक सही है, लेकिन झाडीपट्टी रंगभूमी में अभी भी पेशेवर नाटककारों के 125 से 150 प्रदर्शन हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस तरह के पेशेवर अभिनेताओं, पेशेवर संगीतकारों, पेशेवर गायकों, पेशेवर सेट डिजाइनरों, पेशेवर आयोजकों और नाटकीय दर्शकों के लिए है।

इस झाडीपट्टी रंगभूमी की, विशेषताएं जो अपनी पहचान, अपनी संस्कृति, अपने स्वयं के इतिहास को संरक्षित करती है, एक शाश्वत सत्य है, और यह हमेशा के लिए लगता है।

झाड़ियों में लोक नाट्य मंडलों का व्यवसायीकरणः– प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से समुदाय की सेवा का कार्य तब देखा जाता है जब कई व्यक्ति कई संगठन कर रहे होते हैं। जब पूरे समाज की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास किया जाता है, तो उन प्रयासों या लेनदेन को व्यवसाय कहा जाता है। एक व्यवसाय एक व्यक्तिगत कार्य है जो किसी विशेष व्यक्ति की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किया जाता है। कोई फर्क नहीं पड़ता कि व्यापार, व्यावसायिक संबंध उन सभी संस्थानों के साथ है जो 'आर्थिक मूल्य' बनाते हैं।

व्यापार को वित्तीय मूल्यों के साथ करना है। सामान्य तौर पर, समाज में आर्थिक मूल्यों को बनाने का कार्य सार्वजनिक क्षेत्र के साथ–साथ निजी क्षेत्र में भी देखा जाता है।

• धन कमाने के साथ–साथ धन अर्जित करने की आंतरिक इच्छा के साथ किए गए सभी प्रयास व्यवसाय 'कार्य में किए जाते हैं। शब्द व्यापार बहुत व्यापक है और इसमें प्रकृति से आवश्यक सामान प्रदान करने, मैन्युअल रूप से और यंत्रवत् रूप से उन्हें उचित रूप में परिवर्तित करने, सामान को सही स्थान पर पहुंचाने, माल के भंडारण की सुविधा और उस स्थान पर सामान की आसान डिलीवरी की सुविधा शामिल है, जहां मांग है।

पीटरसन और प्लोमन के अनुसार – व्यवसाय एक ऐसी गतिविधि है जिसमें विभिन्न लोग पारस्परिक लाभ के लिए कुछ मूल्य का आदान–प्रदान करते हैं, चाहे वह सामान या सेवाएं हों।

व्यावसायिक सुविधाएँ – व्यवसाय की कुछ मुख्य विशेषताएं नीचे संक्षेप में बताई गई हैं।

- लाभ कमाना।
- व्यवसाय का संबंध वित्तीय मूल्यों के निर्माण से है।
- जोखिम की उम्मीद है।
- व्यवसाय एक सतत प्रक्रिया है।
- व्यवसाय के माध्यम से रोजगार की निर्मिती
- उत्पादन और व्यापार से माल की उपलब्धता
- समाज की प्रगति और वित्तीय कल्याण ।
- सामाजिक स्वास्थ्य बनाए रखा जाता है। समाज के समग्र विकास के लिए व्यावसायिक प्रगति

लोक रंगभूमी एक व्यवसाय हो गया है:– झाडीपट्टी रंगभूमी के शुरुआती दिनों में, पौराणिक कथाओं और धार्मिक कहानियों का समाज में बहुत प्रचलन था और पौराणिक कथाओं को प्राथमिकता देते हुए इस क्षेत्र में लोक नाटकों (अप्रगत/अविकसित) का प्रदर्शन किया गया था। चूंकि यह विषय मनोरंजन के दृष्टिकोण से लोगों के बीच बहुत लोकप्रिय है, इसलिए कई वर्षों से झाड़ी में किए जाने वाले लोक नाटक समुदाय में विषेश रूप से लोकप्रिय हो गए हैं। नाटक की इस धारा में शौकिया रंगमंच के महत्व को नहीं भुलाया जा सकता है। झाडीपट्टी रंगभूमी वस्तुतः एक शौकिया रंगमंच था। 1970 से 1990 के दो दशकों में, स्थिति जहाँ गाँव वहाँ कलाकार की थी । हालाँकि, 1990 के बाद, झाडीपट्टी रंगभूमी को कुछ समय के लिए ग्रहण लग गया, साथ ही साथ गाँव गाँव में दूरदर्शन के आगमन के साथ, क्षेत्र के लोगों को मनोरंजन का साधन प्रदान किया गया। नाटककारों के मानदेय की लागत में वृद्धि, निवास, मंडप की सजावट, साउंड सिस्टम और अन्य चीजों के कारण नाटकों का प्रदर्शन महंगा हो गया। अतीत में, जबकि शौकिया सर्कल से मुक्त मनोरंजन था, अब टिकट नाटकों का प्रयोग शुरू हो गया है। इस बीच, वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण के कारण, युवा रसिक दर्शकों की आकांक्षाएं, स्वाद और प्राथमिकताएं देखी गईं और उसी मिट्टी से पैदा हुए लेखकों ने झाडीपट्टी रंगभूमी में आगे आए और स्थानीय मुद्दों पर आधारित एक–एक नाटक लिखना शुरू कर दिया। जहां कई नाटक कंपनियों ने अपनी दुकानें शुरू कीं। और इन कंपनियों में प्रतिस्पर्धा शुरू हो गई। यहाँ से, झाडीपट्टी रंगभूमी व्यवसाय पूरे महाराष्ट्र में सबसे आकर्षक व्यवसाय थिएटर के रूप में प्रसिद्ध हुआ। इसलिए, झाडीपट्टी में वाणिज्यिक रंगभूमी/कंपनियों के कारण, गांवों में शौकिया रंगभूमी का अस्तित्व विलुप्त हो गया है। भारत प्रिंटिंग प्रेस और महाराष्ट्र ललित रंगभूमि के पूर्व में, वाडसा–देसाईगंज, डिमटी के एक ही गांव में, अब 50 से अधिक थिएटर कंपनियां हैं। नाटक के मौसम में दिवाली से लेकर होली तक, रु। 50 से 70 करोड़ रु। किस कंपनी को लाना है, इसके लिए विकल्पों की एक विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध हो गई।

पेशेवर प्रगति का मार्ग: – उत्पादन के क्षेत्र में, अर्थात कला उत्पादन के क्षेत्र में, एक विषेश केंद्र में नई नाट्य कलाकृतियों की खरीद की व्यवस्था वाडसा कमर्शियल नाट्यपंढरी में की गई थी, यानी आज यह कारोबार पूरी तरह से एजेंटों के नियंत्रण में है। उपभोक्ता इसका जवाब दे रहे हैं। कोई फर्क नहीं पड़ता कि नाटक झाडीपट्टी क्षेत्र में है या नहीं, इसके अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है, लेकिन तैयार नाटकों के पूरे सेट के लिए वाडा में एजेंटों के पास आना है। इसके कारण हैं, जैसे पेशेवर रंगमंच में बदलाव, नाट्य तकनीक में बदलाव, गीत संगीत में बदलाव, रंगमंच और दर्शकों में बदलाव, बंद रंगमंच, उन्नत रंगमंच में आकर्षक और सुंदर अभिनेत्रियाँ और पेषेवर नाटककारों की मानसिकता में बदलाव।

व्यवसाय की प्रगति जारी है। कई नाटक कंपनियों/मंडलियों ने पैसा कमाने को प्राथमिकता दी है, इसलिए यह देखा गया है कि प्रत्येक मंडल वित्तीय सत्र के दौरान भारी वित्तीय कारोबार कर रहा है।

झाडीपट्टी रंगभूमी बाजार का प्रारूप प्राप्त :– झाडीपट्टी रंगभूमी नाट्य व्यवसाय के लिए एक बहुत बड़ा बाजार है, धन का एक भंडार है। लगभग 10 से 15 हजार लोग इस व्यवसाय से सीधे जुड़े हैं। इसलिए, उनकी आजीविका नाटक के मौसम पर निर्भर करती है। कुछ के लिए, बाजार को निर्वाह के साधन के रूप में देखा जाता है। भारी मात्रा में धन के आकर्षण के कारण नए कलाकार दिखाई देने लगे। इसलिए, यह व्यवसाय बढ़ता गया और वाडसा इन सभी क्षेत्रों के लिए बाजार बन गया। इसे एक व्यवसाय के रूप में भी देखा जाता है जो 6 महीने के लिए रोजगार प्रदान करता है। नाट्य प्रदर्शनों (ऑन–स्क्रीन, पीछे के दृश्यों) के साथ–साथ रसिक दर्शकों को पान टपरी, चाय का ठेला, चने फुटाने वाला , गुब्बारे, खिलौने, होटल मालिक, ट्रांसपोर्टर आदि के लिए रोजगार मिल रहा है। परिणाम स्वरूप, हर साल व्यावसायिक नाटक कंपनियों को मिलने वाला पैसा आज 70 करोड़ रुपये हो गया है। ये एक नाट्यकला का बाजार बन गया है।

अधिक से अधिक लाभ की उम्मीद:–झाडीपट्टी क्षेत्र में नाट्यप्रेमी की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ रही है और क्षेत्र में किए गए नाटकों की रसिक दर्शकों से काफी मांग होती है। यद्यपि आधुनिक तकनीक ने पूरे सामाजिक जीवन को बदल दिया है, लेकिन नाटक के लिए प्यार थोड़ा भी कम नहीं हुआ है। इसलिए गाँव में एकसाथ 2 से 3 प्रयोग किए जाते हैं, और उन सब मे भारी भीड़ होती है। मांग के अनुसार आपूर्ति के हिसाब से नाटककारों की संख्या में वृद्धि हुई। नतीजतन, अधिक से अधिक लाभ एक समीकरण बन गया है, इसलिए नाट्य मंडल अधिकतम मुनाफे की प्रत्याषा में जितना संभव हो उतना प्रयोग करने के लिए तैयार है।

झाडीपट्टी रंगभूमी का 100 प्रतिशत व्यावसायीकरण :– आज, झाडीपट्टी में कई प्रसिद्ध थिएटर समूहों ने क्षेत्र में स्थानीय तथ्यों पर आधारित स्व–लिखित नाटकों की सराहना करना शुरू कर दिया है। एक बिक्री संगठन एक वैज्ञानिक योजना है जिसे नाटकों को बेचने के व्यवसाय में बढ़ने और उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। वित्तीय सत्र के दौरान नाटकों की रिकॉर्ड बिक्री के लिए बिक्री की योजना बनाई जाती है। बिक्री संगठन व्यापार संगठन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। एक बिक्री संगठन में, समुदाय में लोगों के लिए एक नाटक कैसे बनाया जाए और इसका उपभोग कैसे किया जा सकता है, इसका विचार मुख्य रूप से माना जाता है। कला के काम के निर्माण से लेकर इसे सीधे रसिक ग्राहकों तक पहुंचाने तक, नाटकों की वितरण प्रणाली को पहले पेशेवर द्वारा तय किया जाना चाहिए। वे नाटकों की बिक्री के

विभिन्न तरीकों को बनाकर नाटकों की प्रभावी मांग पैदा करके अपने बिक्री कारोबार को आगे बढ़ाते नजर आते हैं। वाणिज्यिक बिक्री संघों का उद्देष्य यह देखना है कि कलाकृति के निर्माण से लेकर उपभोक्ता तक, नाटकों का वितरण, न्यूनतम लागत पर अधिकतम दक्षता के साथ कैसे सफल होगा। इसके लिए, पेषेवर विक्रेता के लिए बाजार पर षोध करना आवष्यक है। मुनाफे की एक निष्चित राशि के साथ भी, नाटक को गुणवत्ता और सस्ते तरीके से बेचना संभव था। इसलिए, गुणवत्ता वाले नाटक और अभिनय के बल पर, एक ही नाटक के 125 से 150 प्रयोग कर रहे हैं। इससे इन नाट्य मंडलों की व्यावसायिक गुणवत्ता आसानी से देखी जा सकती है। बार–बार खेले जाने वाले नाटकों का प्रदर्षन रसीक दर्शकों के आग्रह पर किया जाता है। नाटककारों के साथ, नाट्य दर्शक नाटक में पात्रों के साथ एक हो जाते हैं।

ये पेशेवर नाटक मंडली, जिन्हें व्यावसायिकता के बच्चे के रूप में पोशित किया गया था, आज शब्द के सही अर्थों में व्यावसायिक बन गई हैं। कई ने वडसा में दुकानें स्थापित की हैं। क्षेत्र से विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक संगठन, संघ, शौकिया समूह विभिन्न त्योहारों और समारोहों के अवसर पर वडसा में आते हैं और नाट्य मंडलों/नाट्य अभिकर्ता के साथ अनुबंध करते हैं। विभिन्न थिएटर ग्रुप एक नाटक के लिए 40000 से 60000 रुपये की मांग करते हैं। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि झाडीपट्टी बाजार में नाटकों का व्यावसायिक पहलू इससे आसानी से स्पष्ट हो जाता है, यहां तक कि आयोजक इतनी बड़ी राषि का भुगतान करने के लिए तैयार हैं, इसलिए आज झाडीपट्टी में लोक थिएटर समूहों का पूरी तरह से व्यवसायीकरण हो गया है।

झाडीपट्टी रंगभूमी का आधुनिकीकरण (1990–2019): –

जैसे–जैसे 1990 के बाद दुनिया भर में वैश्वीकरण की हवाएँ चलने लगीं, वैश्वीकरण का भारतीय समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा। आर्थिक उदारीकरण को गति मिली। राष्ट्रों के बीच बाधाओं को कम किया है और कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने देश में प्रवेश किया है। इसी बीच टेलीविजन सेट आ गया। मीडिया ने अपना चेहरा बदल दिया। टेलीविजन के माध्यम से विदेशी धारावाहिकों और फिल्मों को देखने की समाज की प्रवृत्ति बढ़ी। जबकि श्रृंखला में नागरिक जीवन के विभिन्न मुद्दों को प्रस्तुत किया गया था, झाड़ी क्षेत्र के कई नाटककारों ने सामाजिक मुद्दों पर नाटक बनाए और दर्षकों की भूख को संतुष्ट करने के लिए उन्हें मंच पर प्रस्तुत किया। समय–समय पर, लेखन, संगीत और अभिनय के क्षेत्र में, झाड़ी में थिएटर व्यवसाय नए रंगमंच को अपनाकर विकसित हुआ। शुरुआती दिनों में, इस थिएटर में सामाजिक सुधार और देशभक्ति के नाटकों का सफल प्रदर्शन किया गया। लेकिन प्रतिस्पर्धा के युग में, बारंबार नाटक संहिता की गुणवत्ता में गिरावट आ रही है? इस बारे में नाटककारों के विचार का समय था। इसका कारण उनकी लोकप्रियता की खातिर नाटककारों की कम गुणवत्ता के लेखन हैं। चिल्लर व्यंग्यपूर्ण शीर्षक के साथ खेलते हैं और कमर के नीचे के हास्य ने विद्वानों और आलोचकों को नाटक के क्षेत्र में स्पष्ट भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया है। जनाधार इस रंगभूमी की प्रमुख बलस्थान है और रसीक और कलाकार एक–दूसरे से प्यार करते हैं। यह पुराने और नए का संगम है। लेकिन समय के साथ–साथ नाटकीय प्रयोग में तकनीकी और प्रस्तुति में बदलाव आया है, लेकिन नाट्य संहिता को समय के दृष्टिकोण से उत्कृष्ट होना चाहिए। तभी नाट्य संहिता में जीवन का मूल्य मनुष्य को जागष्त कर सकता है और उसके सामने स्थिति पर काबू पाने की क्षमता पैदा करता है। और यही बात दर्शकों को प्रेक्षागृह में आने के लिए बुलाती है। धनंजय नकाडे कहते हैं, किसी भी नाटक का बाहरी रूप कितना भी शानदार क्यों न हो, दर्शक सच्चे अर्थों में अंतर्ज्ञान के बिना पूरे नहीं होंगे। नाट्यकला–कृति की सफलता नाटकों की आंतरिक और बाहरी कलाओं, उनकी खूबियों, उनकी आंतरिक शक्तियों और मानसिकता के गुणों पर निर्भर करती है जिसमें कला निहित होती है।

झाडीपट्टी रंगभूमी ने लेखन, प्रस्तुति, संगीत आदि में आमूल–चूल परिवर्तन किए हैं, और आसान और तरल संवाद, हार्दिक कहानी कहने, उल्लासपूर्ण हास्य गीतों के बजाय गीत और लोकप्रिय लोक संगीत में बदलावों को अपनाते हुए आधुनिकता की ओर अपना सफर जारी रखा है। यही कारण है कि यहां के नाटक लोगों के बीच लोकप्रिय हो गए हैं और आज यह देखा जाता है कि एक ही गांव में लाखों परिवार इस अवसर पर आर्थिक कारोबार कर रहे हैं।

आज, केबल और टेलीविजन की दुनिया में, विदर्भ में नाटक की कला ऐसे समय में पनप रही है, जब मराठी फिल्मों सहित व्यावसायिक नाटक कम हो रहे हैं। इस थियेटर में वाणिज्यिक नाटकों ने 70 करोड़ रुपये की कमाई की है और पूरा थिएटर क्षेत्र झाड़ी पर केंद्रित है। झाडीपट्टी रंगभूमी की प्रसिद्धि दुनिया भर में फैल गई है, कई मराठी फिल्म कलाकार झाडीपट्टी में आ रहे हैं और अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। नाटक शुरू होने से चार घंटे पहले यहां टिकट बिक्री होती हैं और नाटक शुरू होने तक हातो हात टिकट बिक जाते हैं। उन्नत थिएटरों के सिने/नाटक कलाकार नाटक के मौसम के दौरान यहां रहते हैं और अभिनय की बिक्री से नकद कमाते हैं, पीछे के कलाकारों के साथ–साथ झाड़ी के कलाकार भी; उद्योग ने थिएटर क्षेत्र के माध्यम से लगभग 10 से 15 हजार लोगों को रोजगार प्रदान किया है। आज, झाडीपट्टी रंगभूमी के कलाकार पुणे–मुंबई के कलाकारों के साथ अपनी कला प्रस्तुत कर रहे हैं। यह कहानी में अन्य कलाकारों के लिए आत्मसम्मान और प्रेरणा का स्रोत है। झाडीपट्टीके कई पेशेवर कलाकारों ने झाडीपट्टी रंगभूमीको अपने अभिनय कौशल से समृद्ध किया है और झाडीपट्टी के इतिहास में अपनी पेशेवर उपस्थिति बनाई है।